अगर पूरे तौर पर हम अपनी इकॉनमि को प्राइवेट सैक्टर को सौंप देते हैं तो देश का क्या होगा, इससे हमें चिंता होती है। इसलिए उपसभाध्यक्ष महोदय, पब्लिक सैक्टर को डिफैंड करने के लिए, पब्लिक सैक्टर को सुरक्षित रखने के लिए इनकी भूमिका को देखते हुए हाउस को आश्वासन मिलना मैं जरूरी समझता हूं और इसकी तरफ मैं सरकार को इशारा करता हूं। धन्यवाद।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): The Minister of State for Railways, Shri Satpalji Maharaj, will lay on the Table the Supplementary Demands for Grants (Railways), 1996-97.

SUPPLEMENTARY DEMANDS FOR GRANTS (RAILWAYS), 1996-97

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF RAILWAYS (SHRI SATPALJI MAHARAJ): Sir, I beg to lay on the Table, a Statement (in English and Hindi) showing the Supplementary Demands for Grants (Railways), for 1996-97.

MOTION OF THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS —contd.

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): नरेश यादव जी, आपके दल के 11 मिनट हैं, थोड़ा संक्षेप में रहिये।

श्री नरेश यादव (बिहार): इतना समय दे दीजिए। उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव के समर्थन में खड़ा हुआ हूं। कोई भी अभिभाषण महामहिम का हो, वह नीतिगत अभिभाषण होता है जिससे सरकार की नीतियों का स्पष्टीकरण होता है। इसके पहले के अभिभाषणों को मैंने पढ़ा है 1994-95 और 1995-96 के अभिभाषणों को मैंने पढ़ा है। उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं चाहूंगा महामहिम का अभिभाषण जिससे सिर्फ हमारी सरकार की जो विल है, जो इच्छा शक्ति है, वह इससे प्रकट होती है। पैरा 2 में और पैरा 29 को अगर हम ध्यान से पढ़ेंगे तो हिन्दुस्तान की हज़ारों साल तक जिस जमात के पेट और दिमाग पर लात मारी गई, शोषण किया गया, वंचित रखा गया सत्ता से, उसके बारे में आदरणीय राष्ट्रपति महोदय ने इसकी चर्चा अपने अभिभाषण में की है। इसी से स्पष्ट होता हैं कि हमारी संयुक्त मोर्चे की सरकार की नीति के बारे में कि हमारी सरकार क्या चाहती है। सब से पहली बार राष्ट्रपति महोदय ने सब से जो हमारे दबे हुए और कुचले हुए क्लास के लोग हैं, हरिजन हैं, पिछड़े हुए हैं, अल्पसंख्यक हैं, जिसको कहा है 'वंचित वर्ग', यह शब्द हैं वंचित वर्गों के लिए यह कल्याण का काम करेगी और करेगी ही नहीं पैरा 29 में राष्ट्रपति महोदय ने कहा है कि अनुसूचित जनजातियों, पिछड़े वर्गों और अल्पसंख्यकों के विकास के स्तरों में अंतर कम करने और उन्हें शेष समाज के साथ बराबरी पर लाने के लिए वचनबद्ध है। यह आदरणीय राष्ट्रपति ने अपने अभिभाषण में कहा है जिससे हमारी सरकार की मंशा स्पष्ट हो जाती है जिसको मैंने पूर्व में उस पक्ष से कई मित्रों से राष्ट्रपति के अभिभाषण के बारे में सुना है। उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं आपके माध्यम से कि हमारा समाज जाति में, धर्मों में बंटा हुआ है और यह इस बात का परिचायक है जब 1757 में पलासी की लड़ाई हो रही थी सिराजुद्दौला के खिलाफ लार्ड क्लाइव धूर्तता से शिकार कर रहा था, भारत के आत्म सम्मान पर पहली बार चोट पहुंचाई जा रही थी उस समय एक हलवाहा ठीक बगल में खड़ा हो कर निश्चिंत हो कर हल जोत रहा था। जब युद्ध हो रहा हो, भारत को गुलाम करने की साजिश रची जा रही हो, धूर्तता और कपट का शिकार देश में हो रहा हो, सिराजुद्दौला के खिलाफ लड़ाई लड़ी जा रही हो, निश्चित तौर से तलवार से तलवार खनकी होगी, हिंसा हुई होगी, कत्लेआम हुआ होगा लेकिन उस समय वंचित वर्ग जिसके बारे में राष्ट्रपति महोदय ने जिक्र किया है निश्चित हो कर के हलवाहा हल जोत रहा था। उन्हें कोई परवाह नहीं थी कि देश गुलाम हो रहा है या आज़ाद हो रहा है। वही प्रक्रिया है -

कोई नृप हो हमें क्या हानि,
चेरि छोड़िव भईव का रानी।

यही मंशा आज है। मैं कहना चाहता हूं कि जो हज़ारों साल तक पूर्व से चला आ रहा था, आजादी के 50 साल बाद भी वह वर्ग, वह जमात सत्ता के सुख से वंचित रही है, उसके बारे में महामहिम ने पैरा 29 में कहा है कि उन्हें शेष समाज के साथ बराबरी पर लाने के लिए वचनबद्ध है हमारी सरकार, जो संयुक्त मोर्चा की सरकार है। मैं कहना चाहूंगा कि पहली बार हिन्दुस्तान में एक शखसियत ने प्रयास किया था जिसका नाम लाल बहादुर शास्त्री है। हमारे स्वर्गीय प्रधानमंत्री ने "जय जवान-जय किसान" का नारा दिया था।

कम से कम जवानों के साथ इसलिए कि देश की ऐसी हालत थी। उस समय देश का 62 और 65 के युद्ध का सामना करना पड़ा था। उस समय जय जवान और जय किसान का नारा लाल बहादुर शास्त्री जी ने दिया। उसके बाद अगर किसी सरकार ने सच्चे मन से किसानों को ऊंचा उठाने का काम किया है तो वह हमारे संयुक्त